एकलव्य का प्रकाशन

खिचड़ी...

एक लोककथा

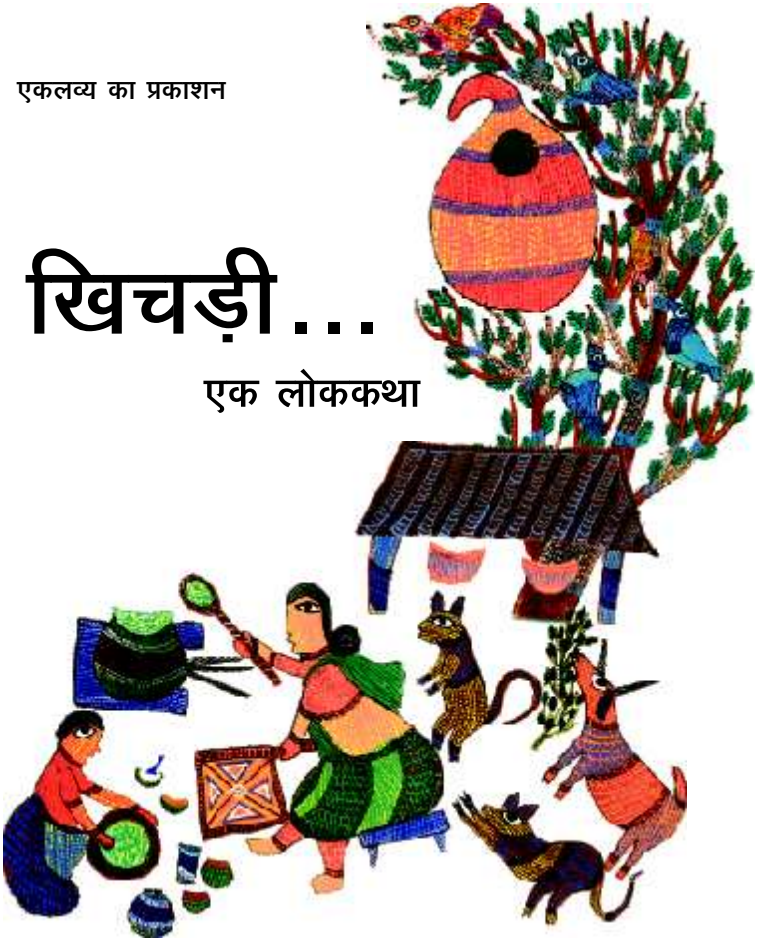

चित्रः दुर्गाबाई व्याम

प्रस्तुतिः जितेन्द्र कुमार

एक बार बिरजू अपनी ससुराल गया। बिरजू की सासू माँ ने उसे चावल और दाल की बनी एक चीज़ खिलाई। बिरजू को उसका स्वाद बहुत अच्छा लगा। उसने पूछा, “इसका नाम क्या है?” सासू बोली, “खिचड़ी।”

बिरजू ने सोचा, “वापस घर जाकर भी मैं खिचड़ी ही खाऊँगा।”
लेकिन कहीं नाम न भूल जाए, इसलिए वह “खिचड़ी-खिचड़ी” बोलता हुआ घर की तरफ चल दिया।

चलते-चलते बिरजू का पैर एक गड्ढे में पड़ गया और उसे झटका लगा। झटके से हड़बड़ाकर बिरजू खिचड़ी के बदले "खाचिड़ी" बोलने लगा। अब वह "खाचिड़ी-खाचिड़ी" बोलता हुआ जा रहा था।

रास्ते में एक किसान अपने खेत में
मक्के के बीज बो रहा था।
उसे "खाचिड़ी-खाचिड़ी" सुनकर
बड़ा गुस्सा आया।

किसान बोला, “मैं तो बीज बो रहा हूँ और यह कहता है ‘खाचिड़ी’।
ठहर जा! अभी बताता हूँ।” और वह डण्डा लेकर बिरजू के पीछे दौड़ा ।
बिरजू घबराकर बोला, “फिर मैं क्या बोलूँ?”
किसान बोला, “बोल उड़चिड़ी।”

बिरजू "उड़चिड़ी-उड़चिड़ी" बोलता हुआ चलने लगा। आगे रास्ते में एक बहेलिए ने चिड़ियों को पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा था। उसे "उड़चिड़ी" सुनकर बड़ा गुस्सा आया।

बहेलिया बोला, “मैं तो चिड़ियों को पकड़ रहा हूँ और यह कहता है ‘उड़चिड़ी’। ठहर जा, अभी बताता हूँ।” वह भी बिरजू के पीछे दौड़ा।
बिरजू घबराकर बोला, “फिर मैं क्या बोलूँ?”
बहेलिया बोला, “बोल बैठचिड़ी।”

अब बिरजू “बैठचिड़ी-बैठचिड़ी” बोलता हुआ जा रहा था। चलते-चलते उसे भूख लगने लगी।

बिरजू एक होटल में गया और बोला, “मैं बैठचिड़ी खाऊँगा।” होटल में किसी की समझ नहीं आया कि बिरजू क्या माँग रहा है।

मगर बिरजू "बैठचिड़ी-बैठचिड़ी" की रट लगाए था। होटलवालों को गुस्सा आ गया। उन्होंने बिरजू की जमके पिटाई कर दी। इतने में बिरजू की माँ वहाँ आ पहुँची।

माँ बोली, “अरे तुमने तो पीट-पीटकर मेरे बेटे की खिचड़ी ही बना दी।” “खिचड़ी” सुनकर बिरजू खुश हो गया। बोला, “हाँ-हाँ, मैं खिचड़ी ही तो खाना चाहता हूँ।”

खिचड़ी... एक लोककथा

चित्रः दुर्गाबाई व्याम प्रस्तुतिः जितेन्द्र कुमार

जून 2008/3000 प्रतियाँ कागज़ः 80 gsm मेपलिथो

परागइनिशिएटिव सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

एकलव्यः ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in pitara@eklavya.in

एकलव्य
pitara

मुद्रकः राजकमल प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः 268 7589

ग्रामीण पाठकों के लिए विशेष किफायती संस्करण